# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षिक संकल्पनाओं के परिप्रेक्ष्य में छायावादी साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन।

## IIMT UNIVERSITY
## MEERUT

### शिक्षा संकाय के अंतर्गत

### शिक्षा शास्त्र में पी० एच०डी०

### की उपाधि हेतु

### प्रस्तुत

### शोध की संक्षिप्त रुपरेखा


**शोध निर्देशक**
डॉ अरुण कुमार
Associate Professor
College of education,
IIMT University, Meerut

**शोधार्थी**
सीमा भाटी


**शोध केंद्र**

College of education,
IIMT University, Meerut
Year 2021

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षिक संकल्पनाओं के परिप्रेक्ष्य में छायावादी साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन।

## 1. प्रस्तावना

छायावादी हिंदी साहित्य आधुनिक भारतीय साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण धारा है, जिसने न केवल साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया बल्कि शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में भी गहरे प्रभाव डाले। यह आंदोलन 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में उभरा और हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की [1]। छायावाद की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसने सौंदर्यबोध, भावुकता और रहस्यात्मकता को शैक्षिक दृष्टिकोण से जोड़ा। इस साहित्य ने अपने समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करते हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, नैतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ किया [2]।

छायावादी साहित्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि हिंदी कविता केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इसमें गहरे शैक्षिक निहितार्थ भी छिपे हुए हैं। छायावाद के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ज्ञान, नैतिकता, और मानव मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। विशेषकर माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा ने शिक्षा को समाज के उत्थान और व्यक्तिगत उन्नति का साधन माना [3][4]। उनकी रचनाएँ पाठकों में संवेदनशीलता, आलोचनात्मक दृष्टि और स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति विकसित करती हैं।

छायावाद के साहित्य में प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य और जीवन की गहन अनुभूतियों का चित्रण मिलता है। यह केवल काव्यात्मक सौंदर्य नहीं रचता बल्कि मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना का भी निर्माण करता है। इस साहित्य की विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों को जीवन के नैतिक और सामाजिक आयामों को समझने की प्रेरणा देता है। उदाहरणस्वरूप, महादेवी वर्मा की रचनाओं में स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय पर विशेष बल मिलता है, जो आधुनिक शिक्षा नीति की दृष्टि से भी प्रासंगिक है [5]।

इस शोध का उद्देश्य छायावादी साहित्य में अभिव्यक्त शैक्षिक संकल्पनाओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समझना और विश्लेषित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समग्र विकास, मूल्य-आधारित शिक्षा और आलोचनात्मक चिंतन को विशेष महत्त्व दिया है। छायावादी साहित्य भी इन सभी बिंदुओं को गहराई से प्रतिध्वनित करता है। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा और साहित्य के बीच सेतु का कार्य करेगा।

शोध के अंतर्गत छायावाद के प्रमुख कवियों की रचनाओं का विश्लेषण किया जाएगा, जिनमें ज्ञान, मनोविज्ञान, सामाजिक उत्पीड़न, व्यक्तित्व विकास और नैतिकता जैसे मुद्दे उभरकर सामने आते हैं [6]। यह विश्लेषण न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयोगी होगा बल्कि यह शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और छात्रों के लिए भी एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा। छायावादी कवियों ने जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों को महत्व दिया, वही दृष्टिकोण शिक्षा के क्षेत्र में आज भी अत्यंत प्रासंगिक है [7]।

छायावादी साहित्य को शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने से विद्यार्थियों के बौद्धिक और भावनात्मक विकास को गति मिल सकती है। यह साहित्य न केवल भाषा और साहित्यिक सृजनशीलता को प्रोत्साहित करता है बल्कि विद्यार्थियों को समस्याओं का विश्लेषण करने, आलोचनात्मक सोचने और स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान करता है [8]। साथ ही, यह साहित्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उस उद्देश्य को सुदृढ़ करता है जिसमें शिक्षा को जीवन उन्मुख, मूल्य आधारित और समग्र विकास का साधन माना गया है।

**2. समस्या कथन -** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में छायावादी साहित्य में अभिव्यंजित शैक्षिक संकल्पनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में, एक समस्या का निरूपण किया जा सकता है। छायावादी साहित्य में अभिव्यंजित शैक्षिक संकल्पनाओं के समीक्षात्मक अध्ययन में संक्षेप में इन खंडों के माध्यम से जो समस्याएं आ सकती हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

**2.1. संदर्भ स्थापित करना:** किसी विषय को व्याख्यात्मक रूप से समझने के लिए छायावादी साहित्य का चयन करना और इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में स्थापित करना संबंधित समस्या हो सकती है।

**2.2. शैक्षिक निहितार्थों की पहचान करना:** छायावादी साहित्य में व्यक्त की गई शैक्षिक संकल्पनाओं को पहचानना और उन्हें नीति के लक्ष्यों और मानदंडों से मिलाना भी समस्या हो सकती है।

**2.3. छायावादी साहित्य के आधार पर शिक्षा नीति में परिवर्तन की सिफारिश:** यह समस्या आ सकती है कि कैसे छायावादी साहित्य में उल्लेखित शैक्षणिक संकल्पनाओं को आधार बनाकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिवर्तन की सिफारिश की जाए।

इन समस्याओं का आधार बनाकर, छायावादी साहित्य में उल्लेखित शैक्षणिक संकल्पनाओं के समीक्षात्मक अध्ययन को संशोधित या पूर्ण करने की सिफारिश की जा सकती है।

**3. समस्या में प्रयुक्त संकल्पनाओं की व्याख्या**

**3.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 -** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक व्यापक परिवर्तनकारी कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक समान, गुणवत्तापूर्ण और समग्र शिक्षा प्रदान करना है [9]। इसमें 5+3+3+4 का नया ढाँचा, कौशल-आधारित शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा, तथा नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक न्याय पर विशेष बल दिया गया है [10]। यह नीति छात्रों को केवल ज्ञानवान ही नहीं बल्कि आदर्श नागरिक और नैतिक नेतृत्वकर्ता बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है [9]।

**3.2 छायावादी साहित्य की संकल्पना -** छायावादी साहित्य हिंदी साहित्य की वह धारा है जिसने आधुनिक काव्यशास्त्र को नई ऊँचाइयाँ दीं। इसका मूल आधार प्रकृति, प्रेम, भावनात्मकता, दार्शनिकता और मनोवैज्ञानिक दृष्टि है [2]। जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत जैसे कवियों ने इसे सौंदर्य और जीवन-दर्शन से जोड़ा [1] [11]। वहीं महादेवी वर्मा और निराला ने इसमें सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और मानवीय मूल्यों को स्थान दिया [5] [3]। छायावाद की कविताएँ प्रेम, विरह, उत्साह और आत्मज्ञान जैसे भावों को गहराई से व्यक्त करती हैं और इन्हें आदर्श जीवन-दर्शन

से जोड़ती हैं [6]। इस प्रकार, छायावाद ने हिंदी साहित्य को भावात्मक गहराई और दार्शनिक दृष्टि से एक नया मोड़ प्रदान किया [8]।

**3.3 छायावादी संकल्पना में प्रयुक्त कवि -** छायावादी साहित्य में कई महत्त्वपूर्ण कवियों का योगदान रहा। जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविताओं में आत्मज्ञान, सौंदर्य और जीवन के आदर्शों पर बल दिया [1]। सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति और संस्कृति के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को स्वर दिया [4] [11]। महादेवी वर्मा ने स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को उठाया [5] [12], वहीं निराला ने आत्मनिर्भरता, वैचारिकता और गहन दार्शनिक दृष्टि को अभिव्यक्त किया [3]। इन कवियों की रचनाएँ केवल साहित्यिक ही नहीं बल्कि शैक्षिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे छात्रों में मानवीय मूल्य, आलोचनात्मक चिंतन और संवेदनशीलता का विकास करती हैं [7]।

## 4. शोध उद्देश्य:

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

**4.1.** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षणिक संकल्पनाओं का विवरण करना।

**4.2.** छायावादी साहित्य में उल्लेखित शैक्षणिक संदर्भों को वर्णित करना।

**4.3.** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नए उल्लेखित शैक्षणिक संकल्पनाओं के संदर्भ में छायावादी साहित्य में तदनुसार संदर्भों की पहचान करना।

**4.4.** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षणिक संकल्पनाओं के अनुसार छायावादी साहित्य में मुखरित साहचर्य की समीक्षा।

## 5. शोध प्रश्न:

**5.1** क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यक्त की गयी शैक्षिक संकल्पना छायावादी साहित्य के साथ मेल खाते हैं?

**5.2** किस प्रकार से छायावादी साहित्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षणिक धारणाओं से मुखरित करता है।

**5.3** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निरुपित शैक्षणिक संकल्पनाएँ कैसे छायावादी साहित्य में उल्लेखित शैक्षणिक विचार बिंदुओं को प्रतिध्वनित करता है।

**6. शोध के महत्व एवं आवश्यकताएँ -** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में छायावादी साहित्य में अभिव्यक्त शैक्षिक संकल्पनाओं का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह शोध शिक्षा और साहित्य के अंतःविषय संबंधों को स्पष्ट करता है तथा नीति के उद्देश्यों को समझने और उनके शैक्षिक निहितार्थों को व्याख्यायित करने में मदद करता है [7]

[8]। छायावादी साहित्य में निहित मानवीय मूल्य, नैतिकता और सामाजिक चेतना छात्रों के समग्र विकास और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की दृष्टि से विशेष रूप से प्रासंगिक हैं [3]।

इस अध्ययन का महत्व चार प्रमुख स्तरों पर देखा जा सकता है। पहला, यह शिक्षा नीति और साहित्य के बीच संबंधों को उजागर करता है और यह प्रमाणित करता है कि साहित्य भी गुणवत्ता और समानता के शैक्षिक मानकों को स्थापित कर सकता है [6]। दूसरा, यह छायावादी साहित्य में निहित शैक्षिक संकल्पनाओं का विश्लेषण कर ज्ञान, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक न्याय और आदर्श नागरिकता जैसे उद्देश्यों को स्पष्ट करता है [10]। तीसरा, इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा नीति में सुधार की संभावनाओं को रेखांकित करते हैं, जिससे आवश्यक परिवर्तन सुझाए जा सकते हैं। चौथा, यह शोध शिक्षा और साहित्य के इंटरडिसिप्लिनरी अध्ययन को सुदृढ़ करता है और साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक संसाधन के रूप में प्रस्तुत करता है [8]।

**7. संदर्भित शोध साहित्य की समीक्षा -** छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि साहित्यिक मूल्यों और शैक्षिक उद्देश्यों का गहरा संबंध है। पूर्व में हुए अनेक अध्ययनों ने इस तथ्य को पुष्ट किया है कि हिंदी साहित्य में निहित मानवीय मूल्य, सामाजिक चेतना और नैतिकता शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों को दिशा प्रदान करते हैं।

**कमल (2020):**[13] कमल का शोध इस बात पर केंद्रित था कि NEP 2020 छात्रों के रचनात्मक और नैतिक विकास को कैसे प्रोत्साहित करता है। इसमें यह उल्लेख किया गया कि भाषा और साहित्य को समावेशी शिक्षा के उपकरण के रूप में देखा गया है। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि साहित्य विद्यार्थियों को भावनात्मक गहराई, सामाजिक समझ और मानवीय मूल्यों की पहचान प्रदान करता है।

**मुरलीधरन (2019):**[14] मुरलीधरन के अध्ययन में तकनीकी-सहायता प्राप्त शिक्षण के परिणाम प्रस्तुत किए गए। इसमें यह स्पष्ट हुआ कि जब छात्रों को डिजिटल संसाधनों और ऑडियो-विज़ुअल माध्यमों से पढ़ाया गया तो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में गणित और हिंदी विषयों में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। यह अध्ययन शिक्षा में तकनीक की भूमिका और समानता को रेखांकित करता है।

**विश्व बैंक रिपोर्ट (2014):**[15] विश्व बैंक की इस रिपोर्ट ने यह उजागर किया कि यद्यपि भारत में स्कूलों में नामांकन की संख्या निरंतर बढ़ रही है, लेकिन सीखने की गुणवत्ता में गिरावट स्पष्ट है। रिपोर्ट के अनुसार, तीसरी कक्षा के लगभग एक तिहाई बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ने में सक्षम नहीं थे और पाँचवीं कक्षा के आधे से अधिक छात्र दूसरी कक्षा का पाठ भी ठीक से नहीं समझ पा रहे थे। इस अध्ययन ने शिक्षा नीति निर्माताओं को यह संकेत दिया कि वास्तविक सुधार तभी संभव है जब गुणवत्ता, शिक्षण विधि और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण को महत्व दिया जाए।

**पार्थ प्रतिम राय (2012):**[16] इस शोध में भारत में वेब आधारित शिक्षा की संभावनाओं और चुनौतियों का अध्ययन किया गया। इसमें यह बताया गया कि किस प्रकार तकनीकी साधनों द्वारा शिक्षा को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में पहुँचाया जा सकता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि ई-लर्निंग के माध्यम से विशेषकर गणित और हिंदी जैसे विषयों में छात्रों की उपलब्धि में सुधार हुआ। यह शोध दर्शाता है कि साहित्य और भाषा शिक्षा को तकनीकी माध्यमों से जोड़कर नई शिक्षा नीति की भावी दिशा तय की जा सकती है।

**प्रथम शिक्षा फाउंडेशन (ASER रिपोर्ट, 2011):**[17] ASER 2011 की रिपोर्ट ने ग्रामीण भारत की शिक्षा की स्थिति को वास्तविक आँकड़ों के आधार पर प्रस्तुत किया। रिपोर्ट के अनुसार, नामांकन दर लगभग 97% थी, किन्तु सीखने के परिणाम बेहद कमजोर थे। पाँचवीं कक्षा के आधे से अधिक बच्चे दूसरी कक्षा का पाठ भी नहीं पढ़ पा रहे थे। इस अध्ययन ने यह दर्शाया कि केवल शिक्षा की पहुँच बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि गुणवत्ता, शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता है। यह रिपोर्ट नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी के रूप में सामने आई।

**राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (2009):**[18] यह रिपोर्ट भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) ने 2009 में प्रकाशित की। इसका उद्देश्य था—भारत में शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता सुधारना और शिक्षा को सामाजिक यथार्थ से जोड़ना। रिपोर्ट में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि शिक्षक केवल ज्ञान के प्रदाता न रहें, बल्कि वे मूल्य-आधारित शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन, और सांस्कृतिक चेतना को विद्यार्थियों तक पहुँचाएँ। इसमें साहित्य और भाषा शिक्षा को "समग्र शिक्षा के वाहक" के रूप में देखा गया। रिपोर्ट ने यह भी कहा कि साहित्यिक कृतियाँ छात्रों को सहानुभूति, सामाजिक न्याय, नैतिकता और रचनात्मकता की ओर प्रेरित करती हैं। इस रूपरेखा ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षक-प्रशिक्षण में साहित्य का समावेश केवल भाषा कौशल तक सीमित न रहकर, बल्कि व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के निर्माण में भी सहायक होना चाहिए। महत्त्वपूर्ण यह है कि यह रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए एक आधारभूत दस्तावेज़ साबित हुई। NEP 2020 में जिस प्रकार मूल्य-आधारित शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन और बहुभाषिकता पर बल दिया गया है, उसकी झलक इस 2009 की रिपोर्ट में पहले ही दिखाई देती है।

**कृष्ण कुमार (2005):**[19] प्रसिद्ध शिक्षा विचारक प्रो. कृष्ण कुमार ने इस पुस्तक में भारतीय शिक्षा प्रणाली की वैचारिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया। उन्होंने दिखाया कि शिक्षा केवल तटस्थ प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक विचारधाराएँ, सांस्कृतिक दबाव और सामाजिक संरचनाएँ गहराई से जुड़ी हैं। उन्होंने विशेष रूप से भाषा और साहित्य की भूमिका को रेखांकित किया कि कैसे ये विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण और आलोचनात्मक चेतना के निर्माण में सहायक होते हैं। यह अध्ययन NEP 2020 की समावेशिता, बहुभाषिकता और मूल्य-आधारित शिक्षा के सिद्धांतों को समझने के लिए पृष्ठभूमि तैयार करता है।

**रामचन्द्र शुक्ल (2005):**[2] रामचन्द्र शुक्ल का यह कार्य हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में मील का पत्थर माना जाता है। इस पुस्तक में शुक्ल ने हिंदी साहित्य की सभी धाराओं, भक्तिकाल, रीति काल, आधुनिक काल, का क्रमबद्ध और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। विशेषकर आधुनिक हिंदी साहित्य के संदर्भ में उन्होंने छायावाद को "दूसरा स्वर्ण युग" कहा। उनका तर्क था कि छायावाद केवल सौंदर्य और कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने मानवीय मूल्य, नैतिक चेतना और राष्ट्रीयता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। छायावादी कवियों, प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला के काव्य में व्यक्तिवाद, आत्मानुभूति, रहस्यवाद और सामाजिक चेतना जैसे आयाम शिक्षा और समाज दोनों को प्रभावित करते हैं। शुक्ल के विश्लेषण का महत्त्व यह है कि उन्होंने साहित्य को केवल काव्य-सौंदर्य तक सीमित न मानकर उसे समाज और शिक्षा की चेतना-वाहक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि साहित्य, विशेषकर छायावाद, शिक्षा

प्रणाली में सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिक मूल्य और राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में एक सशक्त उपकरण हो सकता है।

**गोविंद, आर. (2002):**[20] यह अध्ययन भारतीय प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में जाना जाता है। गोविंद ने शिक्षा गारंटी योजना (EGS) का गहन मूल्यांकन किया और यह पाया कि इससे दूरदराज़ ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की पहुँच बढ़ी, लेकिन गुणवत्ता, भाषा शिक्षा और शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार की आवश्यकता बनी रही। यह शोध शिक्षा में समानता और गुणवत्ता दोनों के संतुलन की ओर इशारा करता है, जो बाद में NEP 2020 का केंद्रीय बिंदु बना।

**यशपाल समिति रिपोर्ट (2000):**[21] यह रिपोर्ट प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. यशपाल के नेतृत्व में प्रस्तुत की गई थी। अध्ययन ने यह दिखाया कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम की अधिकता विद्यार्थियों की रचनात्मकता को बाधित करती है। रिपोर्ट में कहा गया कि शिक्षा का लक्ष्य केवल रटने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा दे। इस अध्ययन ने बाद की नीतियों में मूल्य आधारित शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाई।

**कोठारी आयोग (1964–66):**[22] भारत सरकार द्वारा गठित कोठारी आयोग ने शिक्षा व्यवस्था पर गहन अध्ययन प्रस्तुत किया। रिपोर्ट में यह कहा गया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान अर्जन न होकर मूल्य-आधारित शिक्षा, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी होना चाहिए। आयोग ने साहित्य और भाषा शिक्षा को विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व निर्माण के लिए अनिवार्य माना। इसने बहुभाषिक शिक्षा, राष्ट्रीय एकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को शिक्षा का आधार बनाने की सिफारिश की। यह रिपोर्ट आगे चलकर नई शिक्षा नीतियों, विशेषकर NEP 2020, के लिए आधारशिला सिद्ध हुई।

**8. शोध विधि -** "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित शैक्षिक संकल्पनाओं के परिप्रेक्ष्य में छायावादी साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" के लिए निम्नलिखित शोध विधि अपनाई जाएगी:

**8.1. साहित्य संग्रहण:** पहले, छायावादी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाओं का विश्लेषण किया जाएगा जिसमें शिक्षा संबंधित विषयों को अभिव्यक्त किया गया है। विभिन्न कवियों द्वारा लिखित कविताओं और उपन्यासों का संग्रह किया जाएगा, जो शैक्षिक संकल्पनाओं पर विचार करते हैं।

**8.2. पुस्तकों का अध्ययन:** विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा जिसमें छायावादी साहित्य के शैक्षिक निहितार्थों का उल्लेख किया गया है। इसमें कवि और लेखकों की रचनाएं और संदर्भ पुस्तकें शामिल हो होंगी। छायावादी साहित्य के विभिन्न कवियों द्वारा लिखी गई रचनाओं का संग्रह किया जाएगा। इसमें कविताएं, उपन्यास, कहानियां, नाटक और गीत शामिल हो सकते हैं।

**8.3. संदर्भांकित और तुलनात्मक अध्ययन:** शैक्षिक संकल्पनाओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में रखकर उन्हें नीति के उद्देश्यों, नए शैक्षिक ढांचे और प्राथमिकताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इसके

माध्यम से, संकल्पनाओं का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्थानांतरण किया जा सकता है और इससे नीति में उचित संशोधन की सिफारिश की जा सकती है।

**8.4. शैक्षिक संकल्पनाओं की पहचान:** छायावादी साहित्य की रचनाओं में विद्यालयी और शैक्षिक जीवन से संबंधित विभिन्न संकल्पनाओं की पहचान की जाएगी। ये संकल्पनायें शिक्षा के मूल तत्वों, मानवीय विकास के प्रकारों, ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया, शिक्षा में सामाजिकता, व्यक्तिगत, और मनोवैज्ञानिक तत्वों के बारे में होंगे।

**8.5. विश्लेषण और विमर्श:** संग्रहित रचनाओं के माध्यम से संकल्पनाओं के बारे में विश्लेषण कर उन पर विमर्श किया जाएगा। इसके माध्यम से दिए गए शिक्षा और ज्ञान के मूल सिद्धांतों, मानवीय संवेदनशीलता के प्रतीकों, और विद्यार्थी के विकास में साहित्य के योगदान के प्रति संवेदनशीलता पर विमर्श किया जाएगा।

**8.6. निष्कर्ष निकालना:** संग्रहित शैक्षिक संकल्पनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य, सिद्धांत और आदर्शों के संबंध में निष्कर्ष निकाला जाएगा। इससे नीति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में सुधार की संभावना हो सकती है, और छायावादी साहित्य को मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

## 9. शोध का परिसीमन

यह शोध विशेष रूप से छायावादी हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य तक सीमित है। इसमें अध्ययन का केंद्र केवल प्रमुख छायावादी कवियों, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा की रचनाओं में निहित शैक्षिक संकल्पनाओं के विश्लेषण तक रखा गया है। शोध में अन्य साहित्यिक धाराओं जैसे द्विवेदी युग, प्रगतिवाद या प्रयोगवाद को शामिल नहीं किया गया है। इसी प्रकार, यह अध्ययन केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों, मानदंडों और संकल्पनाओं तक सीमित है; पूर्ववर्ती नीतियों जैसे 1968, 1986 और 1992 की नीतियों का विस्तृत परीक्षण इसमें नहीं किया जाएगा, बल्कि केवल आवश्यक होने पर तुलनात्मक संदर्भ ही दिए जाएँगे।

यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, इसलिए इसमें सांख्यिकीय सर्वेक्षण या मात्रात्मक विश्लेषण सम्मिलित नहीं होगा। साथ ही, इसका कोई निश्चित भौगोलिक या क्षेत्रीय दायरा नहीं है, क्योंकि अध्ययन मुख्यतः पाठ्यसामग्री और नीति दस्तावेज़ों पर आधारित सैद्धांतिक और समीक्षात्मक ढाँचे में किया जाएगा। शोध का फोकस छायावादी साहित्य में निहित उन शैक्षिक मूल्यों पर है, जो मानवीय मूल्य, नैतिकता, राष्ट्रवाद, स्त्री सशक्तिकरण और बहुभाषिकता जैसे पहलुओं से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार यह शोध स्पष्ट रूप से सीमांकित है और अपने निर्धारित दायरे में रहकर छायावादी साहित्य तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्संबंध का परीक्षण करेगा।

**संदर्भ :**


[1] प्रसाद, ज. (1996). *प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य* (पृ. 34). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

[2] रामचन्द्र शुक्ल. (2005). *हिंदी साहित्य का इतिहास* (पृ. 321–340). वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.

[3] निराला, स. त. (2001). *परिमल* (पृ. 230–231). लखनऊ: गंगा ग्रंथागार.

[4] पंत, स. (1972). *वीणा* (पृ. 15). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

[5] महादेवी वर्मा. (2006). *यामा* (पृ. 12). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

[6] दीक्षित, एस. (2008). *निराला का गद्य* (पृ. 55–72). नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.

[7] तिवारी, वि. (2010). *हिन्दी आलोचना* (पृ. 27–46). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

[8] गुर्टू, श. (2015). *महादेवी वर्मा: काव्य, कला और जीवन-दर्शन* (पृ. 101–118). दिल्ली: साहित्य भवन.

[9] भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

[10] रानी, क. (1995). *भारतीय शिक्षा और सामाजिक न्याय* (पृ. 87–105). नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग.

[11] पंत, स. (2019). *पल्लव* (पृ. 38). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

[12] महादेवी वर्मा. (2016). *दीपशिखा* (पृ. 2). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

[13] कमल, एस. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीय शिक्षा में रचनात्मकता, नैतिकता और समावेशिता.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी पब्लिकेशन्स.

[14] मुरलीधरन, के. (2019). *भारतीय विद्यालयों में तकनीकी-सहायता प्राप्त अधिगम के परिणाम. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 38(2), 45–67.

[15] विश्व बैंक. (2014). *भारत में शिक्षा: स्थिति और चुनौतियाँ.* वॉशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक रिपोर्ट.

[16] राय, प. प. (2012). *भारत में वेब-आधारित ई-लर्निंग: संभावनाएँ और चुनौतियाँ* (पृ. 45–62). कोलकाता: ओरिएंट ब्लैकस्वान.

[17] प्रथम शिक्षा फाउंडेशन. (2011). *एएसईआर रिपोर्ट 2011*. नई दिल्ली: प्रथम.

[18] राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद. (2009). *राष्ट्रीय पाठ्यक्रम: शिक्षक शिक्षा के लिए रूपरेखा.* नई दिल्ली: भारत सरकार.

[19] कृष्ण कुमार. (2005). *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा.* नई दिल्ली: सेज.

[20] गोविंद, आर. (2002). *मध्य प्रदेश में शिक्षा गारंटी योजना और प्राथमिक शिक्षा.* नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग.

[21] यशपाल समिति. (2000). *बोझ रहित अधिगम: समिति की रिपोर्ट* (पृ. 1–78). नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय.

[22] कोठारी आयोग. (1966). *शिक्षा और राष्ट्रीय विकास पर रिपोर्ट (1964–66)*. नई दिल्ली: भारत सरकार.